सफला एकादशी — चयनित पूर्ण कथा का पुनर्कथन

Saphala Ekadashi Katha — Complete Selected Chapter Retelling

Source: Sanskrit Wikisource contributors — complete chapter 40, controlling revision 336363. Also compared: Wikisource revision API — complete controlling wikitext; Creative Commons Attribution–ShareAlike 4.0 — adaptation licence; Wisdomlib Sanskrit chapter 40 — full electronic comparison; Wisdomlib / N. A. Deshpande chapter 40 — whole English comparison only; prose not copied; Wikisource rightsinfo — site-wide CC BY-SA 4.0 reuse basis.

Valkala's own retelling of the katha in Padma Purana, Uttara Khanda 6.40.1–49, Sanskrit Wikisource revision 336363, not a transcription of the original text.

नाम, पूजा और पूरा प्रारम्भिक उपदेश

KATHA 6.40.1–15

युधिष्ठिर कृष्ण से पौष कृष्ण एकादशी का नाम, विधि और देवता पूछते हैं। कृष्ण स्नेह से उत्तर देते हैं: बड़े दक्षिणा वाले यज्ञों से अधिक उन्हें एकादशी का व्रत प्रिय है। इस दिन का नाम सफला है और पहले कही विधि से नारायण की पूजा का वर्णन आता है। शेष की नागों में, सर्पभक्षी गरुड़ की पक्षियों में, विष्णु की देवों में और द्विज की मनुष्यों में श्रेष्ठता की उपमा से एकादशी को व्रतों में श्रेष्ठ कहा जाता है। जन्म-आधारित श्रेष्ठता का समर्थन नहीं किया जाता। हरिवासर में लगे लोगों को भगवान प्रिय मानते हैं; धन और मृत्यु के बाद मोक्ष की धार्मिक प्रशंसा है।

हरि के नाम लेकर नारिकेल, क्रमुक, बीजपूरक, जम्बीर, दाड़िम, धात्री, लवंग, बदरी और आम्र से पूजा की चर्चा है। ये स्रोत के फल या सामग्री के नाम हैं, अनिवार्य खरीद-सूची या सभी पौधों की आधुनिक पहचान नहीं। धूप, दीप और विशेष दीपदान के बाद वैष्णवों के साथ जागरण आता है। एकाग्रता से आँख झपकने जितने क्षण का जागरण भी यज्ञ, तीर्थ और अन्य व्रतों से अतुलनीय कहा जाता है; अन्य व्रत इसके सोलहवें भाग के भी तुल्य नहीं कहे जाते और हजारों वर्षों के तप की तुलना आती है। फिर कृष्ण कथा आरम्भ करते हैं।

यह माहात्म्य सुरक्षित विश्राम, भोजन और पानी छोड़ने का निर्देश नहीं। उपवास, जागरण, दान और सामग्री वैकल्पिक हैं। दीप जलाएँ तो निगरानी रखें और सोने से पहले बुझाएँ; धन या मुक्ति की गारंटी नहीं।

Yudhishthira asks Krishna the name, method and deity of Pausha's dark Ekadashi. Krishna answers affectionately: the Ekadashi vow pleases him more than sacrifices with large gifts. It is named Saphala and worship of Narayana follows the earlier method. Comparisons with Shesha among serpents, serpent-eating Garuda among birds, Vishnu among gods and a dvija among humans praise Ekadashi among vows. Birth-based superiority is not endorsed. The Lord values those devoted to Harivasara; wealth and liberation after death are religiously praised.

Worship invoking Hari's names discusses narikela, kramuka, bijapuraka, jambira, dadima, dhatri, lavanga, badari and amra. These are the source's fruit or material names, not a required shopping list or modern identification of every plant. Incense, lamps and special lamp-giving precede a vigil with Vaishnavas. Even a blink-length moment of concentrated wakefulness is praised as incomparable with sacrifices, pilgrimage and other vows; other vows are said not to equal even its one-sixteenth, with a further comparison to thousands of years of austerity. Krishna then begins the story.

This praise does not direct abandonment of safe rest, food or water. Fasting, vigils, gifts and materials are optional. Attend lit lamps and extinguish before sleeping; wealth or liberation is not guaranteed.

लुम्पक का निष्कासन और वन

KATHA 6.40.16–29

चम्पावती के राजर्षि माहिष्मत के पाँच पुत्र हैं। सबसे बड़ा परस्त्री-संबंध, वेश्याओं में आसक्ति और मद्यपान सहित हानिकारक आचरण में लगा है और पिता का धन खर्च करता है। ब्राह्मणों, वैष्णवों और देवताओं की निंदा करता है। पिता उसे लुम्पक कहते हैं; पिता, बंधु और परिवार राज्य से निकालकर छोड़ देते हैं। यह चरित्र का वर्णन है, किसी समुदाय या व्यवसाय के लोगों पर अपमान या बहिष्कार का निर्देश नहीं।

लुम्पक निष्कासन पर विचार करके घने वन में रहने और पिता के नगर को लूटने का निश्चय करता है। वह जीव-हत्या, चोरी और जुए में लगा रहता है। नगर में चोरी करते हुए निशाचर कहे लोगों द्वारा पकड़े जाने पर वह राजपुत्र होने का परिचय देता है और छोड़ दिया जाता है। मूल का निशाचर पद रखा गया है, उसे अपने-आप आधुनिक पुलिस या निश्चित जाति नहीं कहा गया।

वह वन लौटता है, मांस और वृक्षों के फल खाता है। उसके निवास के पास वासुदेव की उपस्थिति से जुड़ा अनेक वर्ष पुराना अश्वत्थ वृक्ष है। कथा उस वृक्ष को पवित्र कहती है; लुम्पक वहीं रहता है। राजपुत्र होने पर छूट या बाद का धार्मिक परिवर्तन चोरी और हिंसा को उचित नहीं बनाते; वास्तविक हानि के लिए जिम्मेदारी और सुधार बने रहते हैं।

Royal sage Mahishmata of Champavati has five sons. The eldest engages in harmful conduct including adultery, attachment to prostitutes and drinking, and spends his father's wealth. He disparages Brahmins, Vaishnavas and gods. His father calls him Lumpaka; father, relatives and household expel and abandon him. This describes a character, not a direction to insult or exclude communities or people in an occupation.

Reflecting on expulsion, Lumpaka decides to live in dense forest and plunder his father's city. He continues killing creatures, stealing and gambling. Caught stealing in the city by people called nishachara, he identifies himself as a prince and is released. The source term remains; it is not automatically equated with modern police or a particular caste.

He returns to the forest, eating flesh and tree fruits. Near his dwelling stands a many-years-old ashvattha associated with Vasudeva's presence. The narrative calls the tree sacred; Lumpaka lives there. Release because of princely status or later religious change does not justify theft and violence; accountability and repair for actual harm remain.

ठंड, फल और अनजाना पालन

KATHA 6.40.30–41

समय बीतने और कुछ संचित पुण्य की धार्मिक भूमिका के बाद पौष कृष्ण दशमी पर लुम्पक वृक्षों के फल खाता है। वस्त्रहीन होकर रात की ठंड से पीड़ित होता है और दृष्टि जाती रहती है। चुना संस्कृत ठंड कहता है; अंग्रेज़ी तुलना यहाँ पहले गर्मी और फिर तीव्र ठंड कहती है। हरि-वृक्ष के पास न नींद मिलती है, न सुख; वह प्राणहीन जैसा है। दाँतों से मुख ढँकने के वर्णन सहित रात बीतती है और सूर्योदय पर भी चेतना नहीं लौटती।

सफला के दिन मध्याह्न में होश आने पर वह दर्द और लड़खड़ाते कदमों से वन में जाता है। भूख से कमजोर होने के कारण जीव मारने की शक्ति नहीं है। संस्कृत में वह फल जुटाता है; अंग्रेज़ी तुलना फल न मिलने को कहती है, जबकि आगे फल अर्पण दोनों में है। चुना संस्कृत का सकारात्मक फल-जुटाना रखा गया है।

वृक्ष पर लौटते-लौटते सूर्य अस्त हो जाता है। दुखी होकर वह बहुत से फल जड़ में रखता और उनसे श्रीपति हरि को प्रसन्न होने की कामना करता है। उस रात भी उसे नींद नहीं आती। कथा में विष्णु इसे जागरण और फलों को पूजा मानते हैं। अनजाने में हुआ व्रत तथा उसके पुण्य से निर्विघ्न राज्य मिलने का पूर्वसंकेत आता है। ठंड, भूख, दृष्टि खोना या बेहोशी पूजा के तरीके नहीं; भोजन, गरम वस्त्र, विश्राम और आवश्यक देखभाल को न रोकें।

After time passes and a religious reference to accumulated merit, Lumpaka eats tree fruits on Pausha's dark Dashami. Without clothing, he suffers the night's cold and loses sight. The selected Sanskrit says cold; the English comparison first says heat and then severe cold. Near Hari's tree he finds neither sleep nor comfort, seeming lifeless. The night passes with a description of covering his mouth with his teeth; consciousness does not return even at sunrise.

At midday on Saphala he regains consciousness, then enters the forest in pain with stumbling steps. Hunger leaves him too weak to kill creatures. In the Sanskrit he gathers fruit; the English comparison says he obtained none, although fruit offering follows in both. The selected Sanskrit's positive gathering is retained.

The sun sets by his return to the tree. Distressed, he places many fruits at its roots and wishes Shripati Hari to be pleased by them. Again he cannot sleep. In the story Vishnu regards this as a vigil and the fruit as worship. The accidental observance and its merit anticipate obtaining an untroubled kingdom. Cold exposure, hunger, lost sight or unconsciousness are not worship methods; do not withhold food, warm clothing, rest or necessary care.

परिवर्तन, उत्तराधिकार और पूरा समापन

KATHA 6.40.42–49

सूर्य उदय होने तक विष्णु के जाने का कथन है। अंग्रेज़ी तुलना स्वर्ग जाना कहती है, पर चुना संस्कृत में गंतव्य स्पष्ट नहीं; नया दृश्य नहीं जोड़ा गया। आकाश में अशरीरी वाणी सफला की कृपा से राज्य मिलने को कहती है। स्वीकृति के बाद लुम्पक दिव्य रूप वाला होता और उसकी बुद्धि विष्णु-भक्ति में लगती है। दिव्य आभूषणों से शोभित होकर निर्विघ्न राज्य पाता है।

वह पन्द्रह वर्ष राज्य करता है। कृष्ण की कृपा से आनंददायक पुत्र और दाराः अर्थात पत्नी या पत्नियों का बहुवचन आता है; अंग्रेज़ी तुलना एक पत्नी कहती है। यह संख्या का नया पारिवारिक इतिहास बनाने का आधार नहीं। राज्य पुत्र को सौंपकर वह कृष्ण के सान्निध्य में जाता है, जहाँ शोक नहीं कहा जाता। पिता द्वारा औपचारिक क्षमा या नया अभिषेक-दृश्य इस अध्याय में नहीं जोड़ा गया।

अंतिम उपदेश में सफला का पालन करने वाले को इस लोक का सुख और मृत्यु के बाद मोक्ष कहा जाता है। सफला में लगे लोगों का जन्म सफल और धन्य बताया जाता है। पढ़ना, सुनना और पालन करना राजसूय यज्ञ के फल के समान कहा जाता है। अलग समापन अध्याय 40 को उत्तरखण्ड के उमापति–नारद संवाद में पौष कृष्ण सफला एकादशी कहता है; तत्काल संवाद कृष्ण–युधिष्ठिर का है। सभी 49 क्रमांकित स्थान और समापन इस मौलिक संक्षिप्त गद्य में पूरे हैं।

ये धार्मिक फल धन, सत्ता, स्वास्थ्य या परलोक की गारंटी नहीं। कथा हानि के लिए जिम्मेदारी नहीं मिटाती। उपवास, जागरण, दान और खरीद आवश्यक नहीं; सुरक्षित भोजन, पानी, वस्त्र, नींद और देखभाल जारी रखें। जुड़े उत्सव-पृष्ठ की तिथियाँ यहाँ दोबारा निर्धारित नहीं की गईं।

The account says Vishnu went by sunrise. The English comparison specifies heaven, but the selected Sanskrit does not state the destination; no new scene is added. An unbodied voice in the sky promises a kingdom through Saphala's favour. After assent, Lumpaka assumes a divine form and turns towards Vishnu devotion. Adorned with divine ornaments, he obtains an untroubled kingdom.

He rules for fifteen years. Krishna's favour brings pleasing sons and darah, a plural form for wife or wives; the English comparison says one wife. This does not establish an invented marriage history or number. Giving the kingdom to his son, he goes to Krishna's presence, described as free of grief. No formal paternal forgiveness or new coronation scene is added to this chapter.

The concluding teaching assigns happiness here and liberation after death to Saphala's observer. Those devoted to it are called blessed and their birth fruitful. Reading, hearing and observing are assigned merit comparable with a Rajasuya sacrifice. The separate colophon identifies chapter 40 as Pausha's dark Saphala Ekadashi within the Uttara section's Umapati–Narada dialogue; the immediate exchange is Krishna–Yudhishthira. All 49 numbered positions and colophon are covered in this condensed original prose.

These religious rewards do not guarantee wealth, power, health or afterlife outcomes. The story does not erase accountability for harm. Fasting, vigils, gifts and purchases are optional; safe food, water, clothing, sleep and care continue. The linked hub's dates are not redetermined here.

Source licence notice (it travels with every copy of this text):

Saphala Ekadashi Katha — adapted from Sanskrit Wikisource contributors, Padma Purana 6.40.1–49, revision 336363, linked in Sources. Electronic source: CC BY-SA 4.0, https://creativecommons.org/licenses/by-sa/4.0/ . Changes: original condensed Hindi prose, full Roman-Hindi and English renditions, summaries and contextual notices by Valkala Editorial (2026). These adaptations are distributed under CC BY-SA 4.0. No source endorsement implied. This licence covers the retelling and its language layers, not unrelated code or site content. No modern Wisdomlib translation is included.
Copyright 2026 Valkala Editorial (original adaptations); shared under CC BY-SA 4.0. Attribution remains Sanskrit Wikisource contributors.